"क्षार कर्म" प्रकरण

* शस्त्रानुशस्त्रेभ्यः क्षारः प्रधानतमः ॥ (सु॰सू॰ 11/3)

* सर्वशस्त्रानुशस्त्राणाँ क्षारः श्रेष्ठो । (अ॰हृ॰सू॰ 30/1)

* क्षार कर्म ⇒ "छेद्य भेद्यलेख्य करणात् ।"
"त्रिदोषघ्नात्" ।
  * क्षार के द्वारा छेदन, भेदन एवं लेखन कर्म किये जाते हैं।
  * क्षार त्रिदोष शमन का कार्य भी करता है।

* मृदु या संव्यूहिम क्षार अतिसेवन से नपुंसकता उत्पादक है।

* क्षार में रस ⇒ * क्षार में अम्लरस छोड़कर पंचरस होते हैं।

* कटुरस (प्रधान), लवणरस (अप्रधान) एवं अम्लरस रहित ⇒ "चरक"
"सुश्रुत"
"वाग्भट"

* लवणरस (प्रधान) व कटु रस (अप्रधान) ⇒ "आचार्य डल्हण"

* क्षार के गुण ⇒ (10) – आचार्य चरक एवं वाग्भट
(8) – आचार्य सुश्रुत

"नैवातितीक्ष्णो न मृदुः शुक्लः श्लक्ष्णोऽथ पिच्छिलः ।
अविष्यन्दी शिवः शीघ्रः क्षारो ह्यष्ट गुणस्मृतः ॥"
(सु॰सू॰ 11/18)

* क्षार के दोष ⇒ (9) – आचार्य सुश्रुत
(10) – आचार्य वाग्भट

Scanned with CamScanner

" अतिमार्दवश्वैत्यौष्ण तैक्ष्ण्यपैच्छिल्यसर्पिताः।
सान्द्रताऽपक्वता हीनद्रव्यता दोष उच्यते ॥ (सु॰सू॰ 11/19)

क्षार के भेद ⇒ (2) - (आचार्य सुश्रुत एवं चरक)

(1) पानीय क्षार ⇒ उत्तम, मध्यम एवं हीन भेद से (3) प्रकार का होता है।

(2) प्रतिसारणीय क्षार ⇒ मृदु (संव्युहिम), मध्य एवं तीक्ष्ण (पाक्य) भेद से (3) प्रकार का होता है।

क्षार निर्माणार्थ कुछ प्रमुख बिन्दु ⇒

- वृक्ष ⇒ मध्यम आयु व बड़े आकार का
- ऋतु ⇒ शरद ऋतु
- अग्नि प्रज्वलन ⇒ तिल नाल से (डल्हण)
- मध्य क्षार निर्माणार्थ ⇒ कट्टशर्करा, भस्म शर्करा एवं शंखनाभि का प्रतिवाप।
- तीक्ष्णक्षार निर्माणार्थ ⇒ दन्ती, द्रवन्ती, चित्रक, लांगली, हिंगु, वचा, अतिविषा, तालपत्री का प्रतिवाप
- निर्माण के (7) दिन बाद क्षार को प्रयोग में लाया जाता है।

Scanned with CamScanner

क्षार के लक्षण ⇒

* तीक्ष्ण क्षार ⇒ क्षार पातन से 100 गिनती तक शरावनाल जल जाये।

* अतितीक्ष्ण क्षार ⇒ क्षार पातन से 100 गिनती से पूर्व ही शरावनाल जल जाये।

* मृदु क्षार ⇒ क्षार पातन से 100 गिनती के बाद शरावनाल जले।

क्षारपातन से पूर्व दोषानुसार कर्म ⇒

(1) वात दुष्टि में - लेखन कर्म

(2) पित्त दुष्टि में - घर्षण कर्म

(3) कफ दुष्टि में - प्रच्छान कर्म

क्षार का प्रयोग (रोगानुसार) ⇒

(1) प्रतिसारणीय क्षार ⇒ कुष्ठ, किलास, तिलकालक, न्यच्छ, व्यंग, विष, मुख रोगों में

(2) पानीय क्षार ⇒ गुल्म, उदररोग, शर्करा, विष, अश्मरी एवं आभ्यांतर विद्रधि में।

* क्षार निषेध ⇒ (A) रक्तपित्त, ज्वरित, तिमिर में पानीय क्षार निषिद्ध है।

Scanned with CamScanner

#

विशेष ⇒

✡ कृमिविष में एवं अर्श में, पानीय क्षार (शिवा क्षार) एवं प्रतिसारणीय क्षार (कासीसादि तैल) दोनों निर्दिष्ट हैं।

✡ क्षार पातन निषेध ⇒ उदर रोग, रक्तपित्त, रजस्वला, गर्भिणी, प्रमेही, क्षतक्षीण, तृष्णा व फलयोनि में क्षार प्रयोग निषेध है।

✡ स्थान जहाँ क्षार पातन निषिद्ध है ⇒ सेवनी, शिश्न, नाभि धमनी, कण्ठ व वर्त्म- के अतिरिक्त नेत्र के सभी भाग मे क्षार प्रयोग निषिद्ध है।

✡ क्षार के संबंध में आचार्यों के कथन ⇒

(1) "विषाग्निशस्त्राशनिमृत्युकल्पः।" (सुश्रुत सूत्रस्थान 11)

(2) "यथाविषं यथा शस्त्रं यथाग्निरशनिर्यथा।" (च॰सू॰ 1/125)

आचार्य चरक ने अविज्ञात औषधि का वर्णन किया है।

क्षार प्रतिसारण विधि ⇒ क्षारकर्म साधित रोगों में, रोगी को प्रकाश वाले एवं निर्वात कक्ष में बैठाकर प्रशस्त तिथि, नक्षत्र एवं मुहूर्त देखकर, दार्व्याकृत- खल्लमुखी शलाका की सहायता से रुग्ण स्थान पर सौ गिनने तक क्षार का प्रतिसारण करने के उपरान्त प्लोत से आच्छादित कर रहने दें। 100 गिनने के उपरांत वस्त्र द्वारा रुग्ण स्थान से क्षार अलग कर, अम्ल द्रव्य (काञ्जी) द्वारा प्रक्षालन करें।

सम्यक् दग्ध के लक्षण ⇒ (1) रोगशान्ति, स्त्राव का अभाव एवं अंग लाघवता।
(2) दग्ध स्थान, निम्न एवं पक्व-जम्बुफल सदृश कृष्णवर्ण का होना

हीनदग्ध के लक्षण ⇒ (1) रुग्ण स्थान पर तोद, कण्डू एवं जड़ता का होना।
(2) रुग्ण स्थान का ताम्रवर्ण का होना

अतिदग्ध के लक्षण ⇒ (1) रुग्ण स्थान पर स्वस्थ धातुओं का नष्ट होना, दाह, पाक एवं लालिमा
(2) शोथ, स्त्राव, मूर्च्छा एवं मृत्यु भी हो सकती है।

Scanned with CamScanner